भगत कबीर – सबद १९

जिउ जल छोडि बाहरि भइओ मीना ॥

रागु गउड़ी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३२६

जिउ जल छोडि बाहरि भइओ मीना ॥
पूरब जनम हउ तप का हीना ॥१॥
अब कहु राम कवन गति मोरी ॥
तजी ले बनारस मति भई थोरी ॥१॥ रहाउ ॥
सगल जनमु सिव पुरी गवाइआ ॥
मरती बार मगहरि उठि आइआ ॥२॥
बहुतु बरस तपु कीआ कासी ॥
मरनु भइआ मगहर की बासी ॥३॥
कासी मगहर सम बीचारी ॥
ओछी भगति कैसे उतरसि पारी ॥४॥
कहु गुर गज सिव सभु को जानै ॥
मुआ कबीरु रमत स्री रामै ॥५॥१५॥

सार: सामाजिक नियमों पर निर्भरता और भौतिक संपत्तियों से जुड़े रहना, हमें अनिश्चितता के अपने डर का सामना करने के लिए मजबूर करता है। हम अक्सर इन बंधनों में सुरक्षा ढूँढते हैं, यह मानते हुए कि यह हमें बदलाव से बचा सकती हैं लेकिन यह अक्सर सुकून से ज़्यादा डर पैदा करती हैं। लगातार बदलती दुनिया का विरोध करके हम वर्तमान से कट जाते हैं। हम बंधन को पकड़े रहने को उद्देश्य और लगाव को सच्चा प्रेम समझ लेते हैं। सच्ची स्पष्टता जीवन के प्रवाह में बहने से आती है भागने के तरीके ढूंढ़ने में नहीं बल्कि जीवन के साथ बिना किसी बंधन के अधिक गहराई से जुड़ने में आती है ताकि हम प्रामाणिक रूप से जीवित रह सकें।

जिउ जल छोडि बाहरि भइओ मीना ॥

पानी से बाहर मछली की तरह होना अपनी आंतरिक स्पष्टता से कटाव की भावना का प्रतीक है।

पूरब जनम हउ तप का हीना ॥१॥

मेरी पिछली मानसिकता, अनुशासन और चिंतन की कमी से भरी थी। यह एक स्वीकारोक्ति है कि जीवन का अधिकांश हिस्सा बिना एहसास के ही बीत गया। (१)

अब कहु राम कवन गति मोरी ॥

अब कहो, मेरी सर्वव्यापी चेतना, मेरी दशा क्या होगी? यह अनिश्चितता के बीच अनुग्रह की खोज में आत्म-जांच के क्षण को दर्शाता है।

तजी ले बनारस मति भई थोरी ॥१॥ रहाउ ॥

अपने गृहनगर बनारस (काशी) को छोड़ने के बाद, मेरी समझ कम हो गई लगती है। यह सामाजिक नियमों पर निर्भरता और उन्हें पकड़ने रहने की व्यर्थता को प्रश्न करता है। (१)(विराम)

सगल जनमु सिव पुरी गवाइआ ॥

मेरा पूरा जीवन शिव की नगरी में बीता लेकिन अब व्यर्थ लगता है। यह धार्मिक अनुष्ठान और दिखावे का प्रतीक है जो भीतर की जागरूकता के बिना केवल बाहरी रिवाज बनकर रह जाता है।

मरती बार मगहरि उठि आइआ ॥२॥

अब जब मृत्यु करीब है तो मैं मगहर गाँव आ गया हूँ। यह अंधविश्वास और अंधभक्ति से जुड़े भय को त्यागने की अवस्था है। (२)

बहुतु बरस तपु कीआ कासी ॥

कई सालों तक मैंने काशी नगरी में तपस्या का पालन किया। यह कथन रिवाजों के पालन और अभ्यास को दर्शाता है।

मरनु भइआ मगहर की बासी ॥३॥
जैसे-जैसे मैं अपने जीवन के अंत के करीब पहुँच रहा हूँ, अब मैं मगहर में रहता हूँ जिसे अपवित्र माना जाता है। यह याद दिलाता है कि मुक्ति का निर्धारण हमारे मरने के स्थान से नहीं बल्कि अंतिम क्षण में जागरूकता की स्थिति से होता है। (३)

कासी मगहर सम बीचारी ॥
मैं काशी और मगहर को एक समान देखता हूँ। यह व्यक्त करता है कि विवेक ने द्वैत को समाप्त कर दिया है।

ओछी भगति कैसे उतरसि पारी ॥४॥
सतही भक्ति किसी को अज्ञान पर विजय पाने में कैसे मदद कर सकती है? इस पर ज़ोर देते हुए कि ईमानदारी के बिना बाहरी कर्मकांडों पर निर्भरता आत्मज्ञान में बाधा डालती है।

कहु गुर गज सिव सभु को जानै ॥
कुछ लोग स्वयं को ज्ञानी गुरु, सृष्टिकर्ता और संहारक समझते हैं। यह कथन इस बात पर जोर देता है कि सत्य के प्रति हमारी समझ बाहरी रूप, नाम और दिखावे की पहचान तक सीमित होती है।

मुआ कबीरु रमत स्री रामै ॥५॥१५॥
कबीर कहते हैं कि एकत्व की सर्वव्यापी श्रद्धा में लीन होकर उन्होंने अपनी पहचान खो दी है जिससे पता चलता है कि विविधता में व्याप्त एकता में उनका अहंकार लुप्त हो गया। (५)(१५)

तत्त्व: भगत कबीर ने साहसपूर्वक उस सदियों पुरानी मान्यता पर प्रश्न उठाया कि काशी में मृत्यु से मुक्ति मिलती है, जबकि मगहर में मृत्यु आध्यात्मिक पतन की निशानी है। उन्होंने इस अंधविश्वास को केवल शब्दों से ही नहीं बल्कि कर्म से भी चुनौती दी, मगहर को अपनी मृत्यु का स्थान चुनकर। इस साहसिक निर्णय के साथ, उन्होंने पुरोहित वर्ग को चुनौती दी और एक शक्तिशाली सत्य व्यक्त

किया कि मृत्यु का स्थान नहीं बल्कि उस अंतिम क्षण में चेतना की अवस्था ही मुक्ति का निर्धारण करती है। ऐसा करके वह हमें याद दिलाते हैं कि जागरूकता का एक क्षण भी खोखले रिवाजों और अंधविश्वासों से डरकर बिताए गए जीवन से कहीं अधिक बेहतर है। उनका चुनाव समय के साथ गूंजता रहा है तथा यह एक आह्वान है कि हम बाहरी जगत की खोज के भ्रम से बाहर निकलें और इसके स्थान पर अपना ध्यान भीतर की ओर केन्द्रित करें, ईमानदार बनें और अपने भीतर सत्य की खोज करें।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com